दुख का दरिया

लेखिका - सुंदरी उतमचँदाणी

ट्रास्लेशन - गाइत्री

वह मुझे उस फंक्शन में बिल्कुल सहज भाव से मिला था। अपनी जेब से एक कार्ड निकाल कर मेरे हाथ में पकड़ाते हुए बोला था, ‘‘मेरे सात वर्षों के सहपाठी दोस्त, ऐसे तो कुछएक मिनटों में मन नहीं भर पाएगा। फुर्सत के समय चले आना और अपने साथ अपनी शेरो-शायरी की किताब भी साथ लेते आना।’’

‘‘आज, किताब तो मेरे हाथ में है लेकिन एक घंटे से इस बैठक वाले कमरे में कैदी सा बना बैठा हूं।’’ यह शब्द लिखकर फिर एक बार नौकर के हाथों सूरज साहब को पर्चा भेजा था।

बस, जैसे चमत्कार हो गया और सूरज साहब खुद चले आए बैठक वाले कमरे में। उसकी उंगली में पड़ी हुई बड़ी सी हीरे की अंगूठी पर जब सूर्य की किरणे पड़ी तो पूरी बैठक जममगा गई। अपनी बाहों में भरकर वह बोला, ‘‘राम, तुज्हारी भाभी का दोष है। मुझे अगर तुज्हारे आने का पहले पता चलता तो तुज्हे यूं ही बाहों में समेटे तुरंत अंदर ले जाता। तुज्हारे जैसे दिलदार का नाम याद आते ही यादों में डूब जाता हूं। लेकिन अब तो तुज्हारी भाभी ने आकर मुझे मेरे दोस्त से अलग कर दिया है। अब ऐसा करो तुम अपनी भाभी के पास बैठो, मैं जरा अपने पार्टनर को एयरपोर्ट से लेकर आता हूं... ।’’

मैं अभी सूरज के प्रभाव से मुक्त ही नहीं हो पाया था कि नौकर ने मुझे ले जाकर सुनीता देवी के आगे खड़ा कर दिया। पता नहीं कैसे 15 साल के लज्ब्रे अरसे ने सुनीता के चेहरे पर अपनी एक भी छाप नहीं छोड़ी थी? मैं जो हाथ जोड़े खड़ा था तो खड़ा ही रह गया। वह पहले तो मुझे देखती रही फिर हंसकर बोली, ‘‘राम? इनके हैदराबाद वाले संगी, आओ-आओ बैठो’’ और खुद आगे-आगे चलने लगी। मैं, जैसे किसी जादू के वशीभूत उसके पीछे-पीछे घिसटता गया। इतना एश्वर्य पूर्ण कमरा होगा, यह तो मैने सपने में भी नहीं सोचा था? एयर कंडीशनर की हल्की सी बू पर कोई खुशबू फैली हुई थी। चंदन का एक छोटा ओर चौकोर तज़्त कोने में रखा था। सुनीता ने मुझे उस पर बैठने का इशारा किया। पूरे कमरे में कहीं भी सिरहाने सहित सोफा या कुर्सी नजर नहीं आ रही थी फिर भी यह सुविधा मुझे दी गई थी। अब पता चला कि पूरे कमरे मैं जो चंदन की प्यारी सी खूशबू फैली हुई थी वो इस तज़्त से ही आ रही थी। सुनीता मेरे सामने एक मुड्डे पर बैठ गई। नौकर एक तिपाई पर ड्राई फ्रूट, बिस्किटऔर पानी रख गया। वह एक गोल डब्बा भी रख गया। सुनीता के शरीर पर कोई भी गहना नहीं था लेकिन जिस वक्त वह मुझे पिस्ते छील कर पकड़ाती जा रही थी उस वक्त मुझे ऐसे लगा जैसे सूरज की अंगूठी वाली सतरंगी आभा कमरे में फैल रही

है। ‘‘इतने सुंदर गुलाबी हाथ, कहीं किसी हीरे की खान से तो नहीं निकले हैं?’’ मैने तक्कलुफ छोड़कर सुनीता से सीधा सवाल किया।

वह हंसकर बोली, ‘‘भई, आप तो शायर हैं, यह तो बोलेंगे ही। पहले तो यह बताईये आप हमारी शादी के समय तो हैदराबाद में ही थे फिर इतने बरस कहां गुम हो गए? कितने बच्चे हैं? दोस्त को चिट्ठी क्यों नहीं लिखते हो?’’

‘‘अरे-अरे एक साथ इतने सवाल?’’ खैर, यह तो था परिचय पुराने दोस्त की नई हालातों से। लेकिन मुझे जो मेरी नलिनी ने सूरज के पास नौकरी प्राप्त करने के लिए भेजा था, वह बात ऐसे माहौल में कैसे कह सकता था? सबसे बड़ी बात तो यह थी कि इस सपने वाले महल में आकर मैं अपना सुदामापन भूल चुका था। काश, मुझे बंटवारे के समय कोई बताता कि फिर से बसने के लिए किसी बड़े शहर या राजधानी में ही ठिकाना ढूंढना चाहिए। लेकिन तब क्या मेरी शायरीजन्म ले पाती?

कुछ भी कहिए मेरी यह मुलाकात बिल्कुल बेकार गई। नलिनी को जब मैने सूरज और सुनीता के महल की बाते सुनाई तो मेरे सीने पर हाथ रखते हुए बोली, ‘‘फिर वहां मत जाना। हम जोधपुर में ही ठीक हैं। हमें बज़्बई वाला बनना ही नहीं है। अपने दोस्त को छोड़ जाएगें पत्नी की अर्दली में? छी:छी: अपने साथ आपको भी एयरपोर्ट ले जाता तो क्या हो जाता?’’

इस ‘‘क्या’’ को तो मैं ही समझ रहा था, नलिनी को क्या समझाता? मेरी तो हाथ की अंगूठी और पैरों के जूते तक बेकार लग रहे थे। चेहरा तो मैने आइने में नहीं देखा था पर हम दोनों दोस्त जो कभी सगे भाई समान लगा करते थे, वह शायद अब आपस में कुछ भी नहीं लग रहे थे। कहां वो चमकता आकाश , कहां मैं धरती की रेत ...छी:छी: ऐसा विचार और शायर के पास? शायर तो है तसव्वुर की दुनियां का सम्राट। खुदी को कर बुलंद इतना कि खुदा बंदे से खुद पूछे कि बता तेरी रजा क्या है?

कोरी बकवास, मेंढ़क के लिए कुएं के पानी में फूलकर फट जाने वाली शामत...। यह विचारों का बहाव सूरज के आदर सत्कार और सुनीता की नम्रता और सुंदरता, पता नहीं क्या-क्या चीजे थी जो मुझे फिर से खींचती हुई उनकी दहलीज पर ले गई। बाहर वाले कमरे तक पहुंचकर अचानक कदम वापस लौट चलने के लिए मजबूर करने लगे क्योंकि इन लोगों को कैसे बताता कि मैं मिलने के लिए नहीं आया हूं बल्कि नौकरी की गरज लेकर आया हूं। यह विचार आते ही पूरा शरीर पसीने से नहा उठा था।

‘‘मालिक और मालकिन घर में नहीं हैं।’’ नौकर की इस सूचना से मेरे मन में शान्ति छा गई। अचानक घर के अन्दर से दो परियों सी बच्चियां निकल कर बाहर बगीचे में आई और ड्राइवर-ड्राइवर चिल्लाती हुई फिरोजी रंग की छोटी सी मोटर कार में बैठ गई। ड्राईवर आया और, ‘‘इन्हें डांस क्लास में ले

जाना है ?''बताकर गाड़ी उड़ा ले गया। हाय रे मैं ?....उनके पिता का खास दोस्त ? मुझ पर उनकी नजर ही नहीं पड़ी ? उस दिन सुनीता ने इनसे परिचय तो करवाया था लेकिन मैं ही शायद कोने में खड़ा था इसलिए। और याद आ गई मुझे अपनी बिटिया नंदनी ! अरे कितना बड़ा हो गया हूं मैं ? मुझे एक विवाह लायक बेटी भी है ? अभी कल ही की तो बात है, मैं और सूरज नदी किनारे जाने के लिए सवेरे-सवेरे शोर मचाते हुए नदी पर आ जाते थे। सिर पर कोई जवाबदारी नहीं थी। अब तो जवाबदारियों के नीचे कंधे ही झुक गए हैं। एक-एक कदम उठा कर वापस जा रहा था कि अचानक बंगले में जैसे जान आ गई। ऐसा लगा जैसे मुर्झाया हुआ सूरज मुखी का फूल सूरज निकलने पर खिल उठा हो। सभी नौकरों को यहां-वहां, जल्दी-जल्दी भागते देखकर मैं भी रूक गया।

बात क्या थी ? इन सबको अपने साहब की मोटरकार का हार्न सुनाई दिया था जिस वजह से सब खड़े हो गए थे। मैं यह तब समझा जब फाटक में से मोटर को अंदर आते देखा। सूरज उतरा और उसके साथ एक क्रिश्चन लड़की भी उतरी, जिसके हाथ में कई पैकेट थे। वैसे सूरज के हाथ भी खाली नहीं थे। एक-दो पैकेट उसके हाथ में भी थे। क्रिश्चन लड़की ने उतरते ही थोड़ी दूर खड़े भोले को बुलाकर डिक्की में से विस्की का कार्टून निकालने के लिए कहा और खुद बाहर के दरवाजे को चाबी से खोलने लगी। इसी बीच सूरज ने मुझसे हाथ मिलाया और मुझे खींचकर अंदर वाले हाल में ले आया जहां क्रिश्चन लड़की रोजी गिलास में बर्फ और विस्की डालकर मुंगफली, बदाम और चीज की प्लेट रख चुकी थी।

मैने ईधर-इधर देखकर पूछा, ''भाभी कहां है ?''

''होगी, यहीं कहीं।'' कहते हुए विस्की का एक गिलास मूझे पकड़ाकर दूसरा खुद उठा कर वह पीने लगा। धीरे-धीरे पुरानी बाते याद करते-करते एक अजीब सी बात पर अटक गया...।

''यह तुज्हारी भाभी है न यहां आकर बहुत तेज हो गई है।''

''अच्छा।''

''हां भाई, बात ही ना पूछो। अब बेचारी रोजी उसे क्या तकलीफ देती है ? पति तो मैं उसका ही हूं कोई मुझे उससे छीन नहीं सकता...।''

मेरी सांस अंदर ही अंदर रुकने लगी, ''तो यह है मेरा सूरज। क्या यह मेरा वही सूरज है ?''

सूरज पर नशा छाने लगा था। उसने कहा, ''आखिर इन लड़कियों को भी तो रोजी रोटी चाहिए... ?''

''यानि ?..तुज्हारा मतबल है कि रोजी जैसी लड़कियों को ?..''

"हां, क्यों ठीक नहीं कहा?...असल में क्या है कि सुनीता को कोई काम नहीं है। बेकार बैठकर दिमाग चलाती रहती है। फिर औलाद में से भी कोई सुख नहीं मिला। बड़ी लड़की अभी अठ्ारह साल की नहीं हुई थी कि जिद्द करने लगी मुझे पारसी लड़के से शादी करनी है। मैने तो कहा था, जहर देकर लड़की को मार दूं। न होगा बांस ना बजेगी बांसूरी...।''

सूरज की बातें अब मेरी बर्दाश्त के बाहर होती जा रही थी। कानों में उंगलियां डालकर मैने कहा, "औलाद के लिए कोई पिता ऐसा भी बोल सकता है क्या?''

"अरे औलाद? पता भी है कौनसे गुल खिलाती है औलाद? शादी के 4 महीने बाद सीधी वापिस आकर यहां बैठ गई....और उसकी मां? अरे बुझे हुए दिये की भी कोई बाती होती है, इस औरत की तो जड़े तक जल चुकी हैं।''

सूरज की आंखो में दु:ख समाता चला गया। ऐसे लग रहा था जैसे वह अभी रो देगा। उसी समय रोजी ने कहा, "आपका दोस्त तो अभी तक आया नहीं है, फोन करूं?''

"नहीं, आज राम है न। सभी दोस्तों की कमी पूरी हो गई है।'' वह उठकर रोजी की कुर्सी के पीछे खड़ा हो गया, "रोजी, तुम बिल्कुल ठीक हो न?''

रोजी ने कहा, "यस बॉस।''

"नहीं, नहीं, नहीं, नही! अभी बॉस नहीं !'' सूरज के हाथ किसी तस्ववूर के गुब्बार मिटाने लगे। मैं अंदर तक कांप गया। सिगरेट का आखिरी टुकड़ा पावं से कुचलने को ही था कि दरवाजे पर किसी रोशनी का एहसास हुआ। सिर उठा कर देखा, सुनीता थी। सूरज की नजर भी उस तरफ गई। वह बोला, " हैलो सुनीता, आज एक पैग बचा है बाकी...।''

सुनीता अंदर तो आ रही थी लेकिन लग रहा था जैसे इन सभी चीजों से बल्कि लोगों तक से भी उसका कोई वास्ता नहीं था। मुझे ऐसे लग रहा था कि वह देवलोक से चली आ रही है और उसके पांव जमीन पर है ही नहीं। जैसे कोई अप्सरा तैरती हुई मुझ तक आ पहुंची और धीरे से बोली, "आपका फोन आया है। आपको घर बुलाया है।''

मैने घड़ी देखी, "ओह इतना समय बीत गया।''

सूरज ने झूमते हुए कहा, ‘‘बीत नहीं गया, उड़ गया बोलो दोस्त।’’ मेरे मन ने बहुत बेतुकी बात बोली, ‘‘वक्त तो सुनीता के साथ रहकर उड़ना चाहिए। रोजी के साथ रहकर वक्त उड़ने का सवाल ही पैदा नहीं होता।’’ मैने कुछ सोचकर अपने यहां आने के कारण को याद करते हुए सूरज से कहा, ‘‘अब, तुम्हारा नज़्बर है मेरे घर आने का। भाभी को भी साथ में लेकर आना।’’

सूरज सोफे पर बैठ गया था। ‘‘जरूर जरूर !’’ कहकर उसने उठने की कोशिश की लेकिन उठ नहीं पाया। ड्राईवर को परियों के साथ जाते हुए देखा था, मैने। आखिर सुनीता ने अपनी कार निकाली, मुझे छोड़कर आने के लिए। सुनीता कार चला रही थी और मैं उसके पास बैठा हुआ था। एक पल के लिए ऐसा लगा कि हम दोनों घोड़े पर सवार होकर सरकारी बाग की सैर को जा रहे हैं और घोड़े की लगाम सुनीता के हाथ में है मैं सिर्फ पीछे बैठा हुआ हूं...।

‘‘वाह जमाना!’’ मेरे मुंह से निकल गया।

‘‘आपने कुछ कहा ?’’ सुनीता ने गाड़ी की स्पीड कम कर दी।

‘‘नहीं...मेरा मतलब, कुछ नहीं ?’’

सुनीता ने हंसकर एक नजर मुझे पर डाली और फिर स्टेयरिंग पर ध्यान देकर स्पीड तेज कर दी। नारी की निगाहें, भावनाओं से भरी हुई। तब दिल ने कहा कि अगर सूरज से ना खुल सका तो, अगर वहीं बात सुनीता को बता दूं तो शायद यहां आना सफल हो जाए...मन को पक्का करके कहा, ‘‘आप मुझे घर छोड़ने चल रही हैं, यह क्या...मेरी खुशनसीबी नही ?’’

सुनीता ने गाड़ी की रज़्तार धीमी कर ली। अपलक मेरी तरफ देखती हुई बोली, ‘‘अचानक मैं, तुम से आप कैसे बन गई ?.....हां, आपकी किस्मत अच्छी है, इस बात से मैं सहमत हूं।’’

‘‘मतलब ?’’ मैने जल्दी में पूछा।

सुनीता हंसने लगी, ‘‘मतलब तो आप ऐसे पूछ रहे हैं जैसे मैने आपकी कोई चोरी पकड़ ली हो।’’

‘‘तो क्या नहीं पकड़ी आपने चोरी ?’’ मैने स्वयं को तनाव मुक्त करके, कार की सीट से टेक लगा ली।

सुनीता ने कार रास्ते में रोकी। एक एसी जगह जहां इसकी कार से किसी दूसरी कार का रास्ता ना रूके।

धीरे से उसने कहा, ‘‘आप पूछेंगे नहीं कि कार क्यों रोकी ? ’’

‘‘हां... बताओ ?’’ मैं असमंजस की स्थिति में था।

वह कुछ देर तक मेरी तरफ देखती रही फिर अपने दोनों हाथों से रूमाल की तह जमाती हुई बोली, ‘‘कल मैने और सूरज ने बैठकर एक बात पर चर्चा की... ।’’

‘‘कौनसी बात पर ?’’ मेरे मुंह से अचानक निकला।

‘‘आप तो बच्चों की तरह चौंक जाते हो।’’

मैं स्वयं पर कंट्रोल कर हंस दिया।

‘‘सूरज और मैने सोचा है कि अंधेरी में जो हम अपनी यूनिट, सूर्यधारा की एक नई आफिस खोल रहे हैं, उससे आपको बांधकर रख ले.. ।’’

मैं हैरान होकर देखने लगा। मन में कहा, ‘‘यही तो मैं आपसे मांगने आया था... ।’’

‘‘नाम-मात्र के लिए ही उस ब्रांच की संचालक मैं कहलाउंगी लेकिन लोगों पर नजर रखना व सारा काम सञ्भालना आपके जिञ्मे होगा... । दिल में कोई गलतफहमी मत लाईयेगा, मैं आपकी बॉस बनकर नहीं होऊंगी। मैं वही रहूंगी, आपके जिगरी दोस्त कीपत्नी सुनीता और बस... ।’’

मैं जज्बाती हो उठा। मैने उसके दोनों हाथ लेकर अपनी आंखों पर रखे। गाड़ी फिर से चलने लगी। मैं आंखे बंद करके उसके हाथों को अपनी आंखो पर रखने वाली घटना पर सोचने लगा। ठंडे नरम गुलाबी हाथ, मन में कहा, ‘बिन कहे मेरी हालत जानकर कितना सुख दिया है मुझे।’

‘‘अब यहां से शायद दाहिनी ओर चलना है ना ?’’

‘‘हां, हां... ।’’ मैने आंखे खोलकर देखा। दायीं तरफ ही चलना था, इस रोड पर पांचवा बंगला और पल भर में कार मौसी के बंगले के अंदर पहुंच गई।

सुनीता को मैं जब घर के अंदर लेकर गया तो वह नलिनी से गले लगकर मिली।

‘‘सूरज की पत्नी सुनीता।’’ मैने नलिनी और मौसी से सुनीता का परिचय करवाया।

''आप क्या समझते हैं कि मैं नहीं पहचानती इनको ?....वैसे कहीं और देखती तो शायद पूछती कि कहीं तुम, सुनीता और सूरज प्रकाश की बेटी तो नहीं हो ?''

सब ठहाके लगाने लगे।

नलिनी ने कहा, ''देखभाल तो मैने भी अपनी कम नहीं की है लेकिन तुम तो अपनी उमर से 10 साल छोटी लग रही हो।''

मौसी ने कहा, ''जीती रहो बेटी। इस नलिनी को तुझ्हारी शादी में नहीं ला पाई थी। तुझ्हारी शादी का कार्ड और एक लञ्बी चिट्ठी मिली थी । फिर तो साल गुजर गए। मुञ्बई में बसने के इरादे से आते ही बोल रहे हैं कि हम यहां सूरज से मिलने आए हैं। इतने सालों के बाद सूरज की याद आई है इनको।''

मैने मौसी से कहा, ''इतने सालों में सूरज कितना ऊंचा उठ गया है, कुछ पता भी है ?''

''बेटा, फिर क्या सूरज नीचे ही खड़ा रहता ?''

''शायरी में तो इन्होंने भी बहुत नाम कमाया है, सभी इनके गीतों और कलामों को पहचानते हैं। लेकिन सुदामा तो सुदामा ही है।'' नलिनी का उदास फीका मुंह देखकर मैने उसी समय उसके मुंह पर हाथ रख दिया...।

रात को जब नलिनी मेरे पास आकर लेटी तो पहला सवाल यही पूछा, ''तुमने सुदामा वाली बात पर मेरा मुंह क्यों बंद कर दिया था ?''

मैने हंसकर उसको सीने से लगाते हुए उसके कान में कहा, ''नलिनी, इस दोस्त ने बिन कहे मेरी दिल की बात जान ली है...।''

नलिनी ने प्यार से पूछा, ''कुछ वेतन वगैरह की भी बात हुई ?''

''नई आफिस का मैनेजर ही मुझे बना रहे हैं।''

सुख की सांस ली नलिनी ने, ''ओह, बिना रूपए—पैसे के बहुत परेशानी होती है। आज मौसी भी पूछ रही थी कि, कितने दिन मुञ्बई में रहने की सोचकर आए हो ? बच्चे तो जोधपुर में अकेले होते होंगे ?''

नई आफिस के मुर्हूत पर नलिनी ने एक शीशे की केबिन दिखाकर पूछा, ''क्या आप बैठोगे इस केबिन में पूरी आफिस पर नजर रखने के लिए?''

''यह केबिन तो भाभी के लिए है। सूरज ने कहा है कि, सुनीता सारा दिन घर में रहकर बोर होती है, फिर रात होते ही मुझसे लड़ती है। अच्च्छा है एक ब्रांच सज़्भालने का बोझ सिर पर होगा तो मुझे परेशान नहीं करेगी।''

''अच्छा?''

नलिनी की इसी अच्छा में पता नहीं क्या-क्या समाया हुआ था, वह मेरा दिल अच्छे से जानता था।

घर आने पर नलिनी मौसी को कहने लगी, ''देखो तो खोदा पहाड़, निकला चूहा।''

मौसी ने जल्दी से पूछा, ''क्यों, नौकरी नहीं मिली क्या सुदामा को कृष्ण के यहां?''

मैने हंसते हुए कहा, ''यह बात नहीं है, मौसी! नौकरी तो मिली, लेकिन मैनेजरी करनी पड़ेगी वह भी सूरज की पत्नी की।''

मौसी एकदम सोफे पर बैठ गई। फिर कुछ सोचकर बोली, ''नौकरी किसी की भी करनी पड़े, तुझे इससे क्या मतलब? तनज़्वाह तो मिलेगी न?''

''और भी बहुत कुछ मिलेगा, मौसी।'' हंसकर नलिनी बोली, ''एक गौरी लड़की होगी, इनकी केबिन में इनके सामने बैठी हुई। और ये बेचारे, शायरी करेंगे या मैनेजरी पता नहीं बस महीने भर में आफिस हो जाएगा बंद...।'' नलिनी ने जोरदार ठहाका लगाया।

कितना शकी होता है नारी का मन...

रात कैसे बीत गई पता ही नहीं चल पाया।

मेरी आंखों में नींद नहीं थी। एक अजीब सन्नाटा छाया हुआ था, मन में। नलिनी ने रसोई का काम खत्म करने के बाद भी जब मुझे जगा हुआ देखा तो मेरी शायरी लिखने वाली डायरी मेरे हाथ पर रख दी।

''अरे, ये क्यों?''

''आप, शेर लिखने के मूड में जो हैं।''

मैं शेर लिखने के मूड में था या नहीं ये अलगबात थी। वैसे मेरे दिमाग से सुनीता का हाथ अपनी आंखों पर रखने वाली घटना निकल ही नहीं पा रही थी।

अपना तकिया कंधो पर रख कर नलिनी ने मेरे पलंग के पास आकर लाईट का बटन बंद करना चाहा तो मैने उसकी बांह खींचते हुए कहा, ''कहां जा रही हो?''

''अरे बाबा, मौसी का घर इतना बड़ा है, किसी ने किसी कमरे में सो जाऊंगी। लाईट में नींद कैसे आएगी मुझे?''

नलिनी का हाथ चुमते हुए उसके पूरे वजूद पर नजर डालकर मैने उसे जाने दिया। जोधपुर के छोटे से घर में जब रात भर शेर लिखने का मूड होता था तब नलिनी आंखे बंद करके भी जागती रहती थी। उसकी इस निस्वार्थ कुर्बानी के आगे मेरा मन झुक सा गया। उस समय जो शेर मैं लिख रहा था उसमें नलिनी और सुनीता एक अजीब तरीके से नया आकार लेकर खड़ी हो गईं थीं।

सूर्यधारा इन्टरनेशनल का पूरा काम मुझे ही देखना था, लेकिन इससे पहले मुझे मैन ब्रांच से महीना भर काम सीखने में लग गया। आफिस से लौटत हुए सूरज अब रोजी और मुझे अपने साथ लेकर कभी पिक्नर तो कभी किसी क्लब में चलता था। थोड़े ही दिनों में, मैं समझ गया कि सूरज ने केवल सुनीता से दूर रहने और रोजी के साथ ज्यादा से ज्यादा समय बिताने के लिए सूर्यधारा इन्टरनेशनल खोलने का नाटक रचा है। लेकिन दोस्ती के बीच में जो पैसों की दीवार थी तो दोस्त को कैसे समझाता? कैसे, उसकी आंखे खोलता? रोजी तो सिर्फ रूपयों की लालच में ही सूरज के साथ थी। अब मुझे सुनीता के लिए बहुत दुख हो रहा था। सूरज तो मेरा दोस्त है। मन ही मन मैं उससे शिकायत कर रहा था कि, यार सच को छोड़ कर झूठ का दामन थाम रखा है तूने।

और एक दिन हकीकत सामने आ ही गई। रोजी ने सूरज से साफ-साफ कह दिया था कि तुमने मेरी कद्र नहीं की है। मैं विलायत में नौकरी करने जा रही हूं। सूरज ने मुझसे आकर कहा कि, मैने अपनी पत्नी से ज्यादा इसको घुमाया फिराया फिर भी...।

मुझे सुनीता का पक्ष लेने के लिए मौका मिल गया था। मैने कहा, ''यही तो इन खरीदी हुई दासियों के नखरे हैं। इनका पेट भरता ही नहीं।''

सूरज ने कहा, ''बेवकूफ कहती है कि मेरी मज़्मी को मकान लेकर दो। पूछो उससे, उसकी मां मेरी कौन लगती है... ?''

मैने कहा, ''दोस्त! ये दाना भी फैंक कर देखो।''

मुझे पक्का यकीन था कि यह औरत, मकान मिलने के बाद सूरज का पीछा छोड़ देगी।

सूरज ने रोजी को मकान लेकर दिया था या नहीं? इसका मुझे पता चलता, उससे पहले ही मुझे सूर्य धारा इन्टरनेशनल की सुनीता वाली ब्रांच में जाना पड़ा।

सुनीता ने कहा, ''मैं यहां बोर हो रही थी।''

मैने कहा, ''यहां तो काम इतना होगा कि बोर होने का टाईम ही नहीं मिलता होगा तुझ्हें।''

''ना तो नये मैनेजर ने मुझे कोई काम सिखाया और ना ही मेरा मन काम में लग रहा है। .... अब तो आपकी कज़्नी मिलेगी...।''

क्या किसी की कज़्नी के लिए भी कोई इतना परेशान होता है? क्यों है यह परेशानी... ?

बात बदलने के लिए मैने हंसते हुए कहा, ''आपके माली ने किस बगीचे से यह फूल लाकर लगाए हैं। आपके गुलदस्ते से कितनी अच्छी खुश्बू आ रही है। वैसे मुज़्बई के गुलाब के फूल, हैदराबाद के फूलों की तरह खुश्बूदार तो नहीं होते हैं।''

सुनीता धीरे से मुस्कराई। गुलदस्ते को देखते हुए बोली, ''यह हैं एवर रेड रोजस, फोरेन वाला एक दोस्त देकर गया था।''

मैने ध्यान से देखा, बिल्कुल असली दिखने वाले कोमल परिवार वाले कागज के गुलाब थे। और इस शीशे की केबिन के अंदर गुलाब जल की खुश्बू फैली हुई थी। हैरानी वाली बात तो यह थी कि यहां भी नकली गुलाब रखे हुए थे और वहां सुरज के पास भी रोजी थी। सुनीता ने एक फाईल खोली और मेरे सामने रख दी। मैं, सूरज और उसके बारे में सोचता हुआ उसे ही देख रहा था। सुनीता ने आंख के इशारे से मुझे फाईल देखने को कहा।

अहा! यहां तो फाईल के ऊपर मेरा ताजा शेर लिखा हुआ था, 'कुमोदनी, तुझ्हारे बड़े और गुलाबी हाथ...।' एक दबी हुई हंसी, ठहाका बनने के लिए चेहरे तक आई। लेकिन सामने वाली भी उस हंसी में शामिल होगी या नहीं इस ज़्याल से जो सुनीता की तरफ देखा वो बिल्कुल शांत-गज़्भीर थी। मेरी हंसी उड़ गई और उसकी जगह एक डर ने ले ली।

सुनीता ने कहा, ''तो इस उमर में आप किसी कुमोदनी को चाहने लगे हैं? नलिनी बेचारी तो ऐसे शेर देखकर दुखी होती होगी?''

मैने गला साफ करते हुए कहा,''नलिनी तो शादी से पहले ही मेरी इस किस्म की शायरी को देखती आई है। कहती है, भगवान ने एक किस्म की मिट्टी से औरत को बनाया और दूसरे किस्म की मिट्टी से मर्द को बनाया है। मैं उसी जवाबी मिट्टी से बना हुआ हूं, उसका एक हिस्सा...।''

अपने दोनों हाथ ठुड्डी के नीचे रखकर सुनीता सब सुन रही थी।

मैने चुपी साध ली....एक पल के बाद मैने कहा, ''कुछ तुम भी कहो न।''

लज़्बी सांस छोड़कर सुनीता ने कहा, ''आपकी नलिनी का यह विचार बहुत अच्छा है..पूरी स्त्री-जात के लिए अच्छा विचार है...लेकिन हालात, हर स्त्री के लिए अलग-अलग हैं। कुछ के लिए वो समय आता है जब पति-पत्नि एक दूसरे से अलग रहने लगते हैं। एक ही छत के नीचे रहते हुए भी एक दूसरे के दुख सुख को समझने के लिए तैयार नहीं होते। ऐसे समय में औरत के मन पर उदासी छा जाती है। सारे संसार की खुशियां उसे दुख का दरिया लगने लगती हैं.....और तब शायद काम ही उसका सहारा बन जाता है।''

मैं सुनीता के बर्फ से सफेद वजूद को देखता रह गया...अचानक इस मूर्ति पर छा गई मेरी नलिनी की सूरत। नलिनी के वजूद पर घर की देखभाल और रसोई के कामों ने एक काला परदा सा चढ़ा लिया है। लेकिन अंदर मचल रहे दुख के दरिया की बात तो उसने कभी भी नहीं कही।

हंसते हुए सुनीता ने टोका, ''अपनी नई खोज, कुमोदनी पर किताब लिखने लगे क्या?''

मैने कोई जवाब नहीं दिया। बस उस आकृति को देखने लगा जिसके हर हिस्से से जगमगाहट निकल रही थी, जैसे पानी के ऊपर सूरज चमक रहा था...मगर मन में था वही दुख का दरिया...।

कितनी देर तक सुनीता चुप बैठी रही। आखिर जैसे किसी धुएं को हाथ से हटाती हुई बोली, ''सामने देखो आपकी टेबिल पर कितने लोग इकटठे हो गए हैं।''

मैने शीशे की केबिन से थोड़ी दूर रखी अपनी काम करने वाली टेबिल की तरफ देखा। वास्तव में वहां भीड़ इकट्ठी हो गई थी।

सुनीता ने मेरी आंखो में देखते हुए कहा, ''आप सांताक्रूज ब्रांच से इस आफिस का काम सीखकर आए हैं। अब वह मुझे भी सिखा दो तो यह भीड़ मेरी टेबल पर भी आए...मैं काम में बिजी रहना चाहती हूं।''

मैं उसकी मोती जैसी आंखों में दुख के दरिया का नजारा देख रहा था। एक कविता की लाईन मन में आने लगी, 'कुमोदनी, तुम हो जल का भ्रम...।'